



लोक प्रशासन में  
उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री पुरस्कार  
**Prime Minister's Awards for  
Excellence in Public Administration**

**2013 - 2014**

प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग  
कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय  
भारत सरकार

Department of Administrative Reforms and Public Grievances  
Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions  
Government of India

पहल का नाम - सरगुजा फुलवारी पहल, छत्तीसगढ़

पुरस्कार विजेता - श्री आर. प्रसन्ना, कलेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट, जिला सरगुजा, छत्तीसगढ़

### परियोजना संक्षेप में

एकीकृत बाल विकास स्कीम (आईसीडीएस) पोषण संबंधी एक मुख्य राष्ट्रीय कार्यक्रम है। तथापि इसके संसाधनों को 3-6 वर्ष के आयु समूह के बच्चों पर अधिक केंद्रित किया जाता है। गर्भवती महिलाओं और 3 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए आईसीडीएस में मुख्यतः राशन घर ले जाओ (टीएचआर) की व्यवस्था है जो पोषक विविधता और दिवस देखभाल के अंतराल को कम करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

कुपोषण की सतत चुनौती का सामना करने के लिए 3 वर्ष से कम आयु के बच्चों और गर्भवती महिलाओं की जरूरतों को पूरा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरगुजा फुलवारी पहल फुलवारी नामक समुदाय प्रबंधित बाल पोषण और दिवस देखभाल केंद्र की स्थापना करने का एक नवप्रवर्तन है ताकि 3 वर्ष से कम आयु के बच्चों के बीच कुपोषण का निराकरण करने पर ध्यान केंद्रित किया जा सके।

### विशेषताएं

- फुलवारी केंद्र शुरू करने के लिए अत्यंत अभाव ग्रस्त तथा कुपोषित जनजातीय निवास स्थानों को प्राथमिकता दी गई। इनमें से, ऐसे निवास स्थान जहां स्थानीय समुदाय बाल देखभाल हेतु स्वैच्छिक समय का योगदान करके फुलवारी केंद्र संचालित करने हेतु कृत संकल्प थे, उनका अंतिम रूप से चयन किया गया। ग्राम पंचायतों तथा मितानी नामक सामुदायिक स्वास्थ्य वर्करों ने समुदायों को संगठित करने के लिए मिलकर कार्य किया। जिला पंचायतों ने प्रत्येक चयनित निवास स्थान में फुलवारी केंद्र संचालित करने हेतु माता समूह को अनुदान (50,000/- रूपए प्रति वर्ष) प्रदान किया।

**Name of the Initiative - “Surguja Fulwari Initiative”, Chhattisgarh**

**Name of the Awardee -** Shri R. Prasana, Collector & District  
Magistrate, District Surguja, Chhattisgarh

**Project in brief**

Integrated Child Development Scheme (ICDS) is the main national programme on nutrition. Its resources, however, are focused more on children in the age group 3-6 years. For the pregnant women and under-3 year children, ICDS mainly provides Take Home Rations (THR) which is not adequate to address the gaps in dietary diversity and day care.

Addressing the needs of under-3 year children and pregnant women is of crucial importance while tackling the persistent challenge of malnutrition. Surguja Fulwari Initiative is an innovation to set up Community managed Child Nutrition cum Day Care centers called Fulwaris to focus on addressing malnutrition among under-3 children.

**Implementation Highlights**

- Tribal habitations with higher levels of deprivation and malnutrition were prioritized for starting Fulwari centers. Out of these, habitations where the local community resolved to run a Fulwari centre by contributing voluntary time for child care were finally selected. Gram Panchayats and Community Health Workers called Mitanins worked together for mobilizing the communities. The Zila Panchayat provided a grant (average Rs.50,000 p.a.) to mothers’ group in each selected habitation to run the Fulwari.

- फुलवारी सप्ताह के 7 दिन में प्रत्येक दिन 7 घंटे के लिए खुला रहता है। 6 माह से 3 वर्ष की आयु के बच्चों तथा गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली महिलाएं फुलवारी केंद्र में आती हैं तथा प्रतिदिन तीन बार गर्म भोजन का आनंद लेती हैं। फुलवारी के भोजन में कतिपय मुख्य संघटक अंडे, हरी सब्जी और वसा हैं। प्रतिदिन दो माताएं खाना पकाने का समय स्वैच्छिक रूप से देती हैं तथा फुलवारी में बच्चों की देखभाल करती हैं। समुदाय के किसी इच्छुक सदस्य द्वारा स्वैच्छिक रूप से स्थान के लिए योगदान दिया जाता है। जिला पंचायत से प्राप्त अनुदान का उपयोग मुख्यतः माता समूह द्वारा फुलवारी के लिए राशन और हरी सब्जियां खरीदने में किया जाता है। माताएं फुलवारी के संचालन में अपनी सक्रिय भागदारी के जरिए बाल भोजन तथा साफ-सफाई के बारे में भी सीखती हैं। माताओं को उनके वासभूमि पर किचन गार्डन, मुर्गी पालन, फलदार वृक्ष आदि लगाने के लिए प्रोत्साहित और प्रशिक्षित भी किया जाता है।
- फुलकारी एक नवीन पहल है जिसमें किसी नए वर्कर की नियुक्ति नहीं की जाती और न ही किसी नए अवसंरचना की जरूरत होती है लेकिन फिर भी यह छोटे बच्चों को पोषण और दिन में देखभाल की सेवाएं उपलब्ध कराने में सक्षम है। यह एक स्थायी मॉडल है जो सरकारी धनराशि को सीधे ही बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं पर व्यय करता है और वर्करों को कोई भुगतान भी नहीं करना पड़ता। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि फुलवारी को आरंभ करने के लिए किसी पूर्व तैयारी अवधि की जरूरत नहीं होती क्योंकि इसमें कोई नियुक्ति (स्टाफ) अथवा निर्माण (भवन) शामिल नहीं हैं।

### प्रभाव

माता समूह ने अपने स्वैच्छिक प्रयासों से अब लगभग एक वर्ष के लिए लगभग 300 फुलवारी केंद्र के परिचालन का प्रबंध किया है। इस परियोजना से लगभग 3500 बच्चे तथा 600 गर्भवती महिलाएं लाभान्वित हुईं। यह पहल कुपोषण को समाप्त करने में पंचायतों की सहभागिता कराने में सफल रही।

- The Fulwari stays open for 7 hours a day, 7 days a week. Children aged 6 months - 3 years and pregnant and lactating women come to Fulwari and receive three hot cooked meals daily. Eggs, green vegetables and oil form some of the key components of food in the Fulwari. Everyday two of the mothers volunteer their time to cook and take care of children in the Fulwari. The space is contributed voluntarily by any willing member of the community. The grant from Zila Panchayat is mainly used by mothers' group for buying ration and vegetables for the Fulwari. Mothers by their active involvement in running the Fulwari also learn more on child feeding and hygiene. Mothers are also encouraged and trained to grow kitchen gardens, backyard poultry, fruit trees etc. in their homesteads.
- Fulwari is an innovative initiative which does not appoint any new worker nor does it need any new infrastructure and yet is able to provide nutrition and daycare services for young children. It is a sustainable model which spends Government funds directly on food for children and pregnant women and not on paying more workers. The biggest advantage is that there is hardly any gestation period in starting the Fulwari since no recruitment (of staff) or construction (of building) is involved.

### **Impact:**

Mothers' groups have managed to run close to 300 Fulwari centres for almost a year now with their voluntary efforts. Around 3,500 children and 600 pregnant women have benefited from the project. The initiative has succeeded in involving Panchayats in addressing malnutrition. The knowledge of mothers has also improved in terms of child-care practices.

बाल देखभाल व्यवहारों के संबंध में माताओं के ज्ञान में वृद्धि हुई। बाल कुपोषण, रूगण्ता तथा मृत्यु के मापनीय संकेतकों में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई।

यह पहल सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने के तंत्र के रूप में भी सफल रही क्योंकि समुदाय अपने बच्चों की देखभाल करने के लिए एक साथ आगे आए। इससे लैंगिक भेदभाव में कमी आई। माताएं उपार्जन अवसरों (जैसे मनरेगा कार्य) में भाग लेने में सक्षम होती हैं क्योंकि फुलवारी बाल देखभाल के केंद्र के रूप में कार्य करती है। फुलवारी ने अस्पृश्यता की कुप्रथा को भी नियंत्रित किया। फुलवारी केंद्रों में सभी जातियों के बच्चे तथा गर्भवती महिलाएं एक साथ खाना खाते हैं।

## Category - Individual

---

A significant drop in measurable indicators of child malnutrition, morbidity and mortality has been recorded.

The initiative has also succeeded as a mechanism for promoting social cohesion as community comes together for taking care of its children. It has reduced gender discrimination. Mothers are able to participate in earning opportunities (like MNREGS work) as Fulwari serves as a collective for childcare. Fulwari has also taken the practice of untouchability head-on. Children and pregnant women from all castes eat together at the Fulwari.